

P. 9, 18, 23. तस्य वृत्तो मुनेर्वाक्यम् — तथेति प्रतिज्ञयाह R. 1, 2, 22. Buāg. P. 6, 5, 44. तथेति च नृपस्यासौ मन्त्रिणः प्रतिगृह्णते R. 1, 11, 18. RAGH. 1, 92. एवं शतस्तु गुरुणा प्रत्यगृह्णात्कृताञ्जलिः Buāg. P. 9, 2, 10. — Vgl. प्रतिगृह्ण u. s. w. — caus. Jmd Etwas empfangen heissen, darreichen; mit doppeltem acc.: फलपुष्पोदकं नाम प्रतिग्राहयितुं नृपम् MBH. 1, 1790. 3, 1789. 13, 3134. R. 4, 37, 36. Çāk. 116. ज्ञायाप्रतिग्राह्यतगन्धमात्याम् (धेनुम्) RAGH. 2, 1.

— संप्रति Jmd freundlich aufnehmen, willkommen heissen MBH. 13, 3863.

— वि 1) auseinanderhalten, — spreizen: (स्रवस्व) विगृह्य चतुरः ऋदः AV. 4, 15, 14. — 2) vertheilen, abtheilen; namentl. Flüssiges schöpfend vertheilen, auf mehrere Male ausschöpfen: अचेतसो वि गृह्ये पुरुषांम् ableiten RV. 7, 18, 8. (आद्यम्) बुद्धं चतुष्पदे विगृह्णाति ÇAT. BR. 3, 2, 8. ग्रहणम् 9, 4, 25. पात्रैः 4, 1, 3, 5. 2, 3, 6. fgg. 3, 5, 9. TS. 2, 5, 7, 2. 6, 5, 10, 1. TBH. 1, 4, 1. KĀTJ. ÇR. 9, 14, 8. 20, 4, 29. — 3) zerlegen (ein zusammengesetztes Wort in seine Bestandtheile) P. 4, 2, 93, Vārti. 3, 71, Vārti. 6, 2, 91, Sch. 7, 3, 44, Sch. — 4) abtheilen, gesondert halten, isoliren (vgl. u. प्र 8.): पोलशान्तेरेण विगृह्य Çāk. ÇR. 10, 8, 18. 13, 2, 8. विग्राहम् ĀÇV. ÇR. 8, 3. — 5) Streit führen, kämpfen: संदधीत न चानार्यं विगृह्णीयान्न वन्धुभिः MBH. 12, 2705. Hit. IV, 34. Daçak. in BENF. Chr. 180, 22. ÇÇ. 1; 51. विगृह्णश्चारिभिः सह R. 6, 11, 11. कथमनेन वलवता मार्थं भवान्विग्रहीतुं समर्थः Hit. 67, 13. तदा यायादिगृह्यैव M. 7, 183. MBH. 12, 2663. R. 4, 54, 12. bekämpfen, bekriegen: विगृह्य शत्रून्कौत्सेय ज्ञेयः नित्यतिस्तदा MBH. 15, 220. विगृह्यमाणो गन्धर्वः R. 3, 37, 7. Hit. IV, 34. शरजालेन — व्यगृह्णं सहदेतैषैस्तत्पुत्रम् MBH. 3, 12226. विगृह्यते राक्षणा दिनाधीनः PAÑKĀT. I, 231. BHATT. 6, 86. 17, 23. — 6) ergreifen, packen: अन्नभूमिगताश्चान्ये कृपायां चरणान्यथ । व्यगृह्णन्दानवाः ARĀ. 9, 8. धनुर्विगृह्य MBH. 4, 2086. केशे विगृह्य MĀKĀ. 149, 16. — 7) Jmd freundlich empfangen, willkommen heissen MBH. 3, 12274. — 8) anlegen: अनुपुगं विगृहीतदेहाः (ब्रह्मविष्णुगिरिशाः) Buāg. P. 4, 1, 27. — 9) wahrnehmen, erkennen: यदास्य चित्तमर्थेषु समेधिन्द्रियवृत्तिभिः । न विगृह्णाति वैषम्यम् Buāg. P. 3, 32, 24. — Vgl. विग्रह u. s. w. — caus. bekämpfen lassen Daçak. 193, 1. BHATT. 12, 30. — desid. zu bekämpfen wünschen: व्यञ्जित्तसुरान् BHATT. 17, 39.

— सम् 1) zusammenfassen, — raufen; in die Hand fassen. ergreifen: रोदसी यत्संगृह्णाः काशिरित्ते RV. 3, 30, 5. 3, 6, 17. आपं इव काशिना संगृहीताः 7, 104, 8. 8, 39, 12. 4, 81, 7. 140, 7. संगृह्या न आ भूरा भूरे पृथः 3, 34, 15. 8, 70, 1. 10, 44, 4. VS. 9, 4. पृथ्याम् TS. 6, 1, 6, 4. AV. 10, 4, 19. तामानार्धं त्रयो अहं भेषजं सन् जग्रभम् 6, 21, 1. ÇAT. BR. 2, 2, 3, 3. 3, 4, 22. KĀTJ. ÇR. 7, 7, 20. ĀÇV. GRHJ. 1, 21. 2, 6. — संगृह्य धनं सुवद्ध माणिरत्नमज्ञात्रिकम् R. 1, 17, 15. कालाकलं विपं घोरं संज्ञयाह 45, 26. पाशान् Hit. 23, 11. संगृह्णीतौ काशिकनुत्तरीयम् MBH. 3, 15602. स तस्य तस्य सन्नस्य तत्तद्भ्रमनुत्तमम् । संगृह्य तत्समैरङ्गैर्निर्ममे स्त्रियमुत्तमाम् ॥ 8359. शोणितं यावतः पाशून्संगृह्णाति महीतले M. 11, 207. 4, 168. MBH. 13, 4116. इमो महोम् — तं शेष यथावत्संगृह्य तिष्ठस्व यथाचला स्यात् 1, 1582. तेजो त्रैलोक्यम् 13, 1971. संगृहीतांशुर्गुमान् R. 3, 36, 22. ग्रन्थम् 1, 32, 21. SUND. 4, 17. कस्ते R. 3, 48, 9. PAÑKĀT. 129, 22. 263, 5. 10, 11. पौष्टे R. 3, 9, 21. ergreifen und mit sich nehmen: ततो ऽन्यदपि संगृह्य याति PAÑKĀT. II, 12. स संगृह्य कुमारं तं प्रविशेश गृहम् MBH. 2, 737. ergreifen. über Jmd

kommen, von Krankheiten und Gemüthszuständen: यदमणा समगृह्यत 1, 4142. कृपासंगृहीतेन हृदयेन 3, 563. — 2) zusammenbringen, sammeln, um sich versammeln: औपधानि च सर्वाणि मूलानि च फलानि च । चतुर्विधांश्चैव वैद्यान्वै संगृह्णीयाद्विशेषतः (नराधिपः) ॥ MBH. 12, 2654. संगृह्णीयादनुत्तमानसहायान् 5, 1357. संगृहीत = आचित H. an. 3, 248. MED. L. 89. — 3) auffangen: यथा हि गोवृषो वर्षं प्रतिगृह्णाति लीलया । तथा भीमो नरव्याघ्रः शरवर्षं समग्रहीत् ॥ MBH. 7, 5235. — 4) in sich schliessen, enthalten PAT. zu P. 8, 1, 55 und 2, 25. Sch. zu SĀKṢHJAK. 31 (S. 158). — 5) im Zaum halten, lenken, regieren: (मेकन्दवाहः) मातलिसंगृहीतः ARĀ. 1, 2. संगृहीता कृपा मया MBH. 3, 12150. 12159. 4, 1188. BENF. Chr. 36, 17. N. 21, 5. सुसंगृहीतराष्ट्रः पारिव्यः M. 7, 113. — 6) zuhalten: मुखम् KĀTJ. ÇR. 6, 5, 18. — 7) zusammenziehen, enger —, schmaler —, dünner machen: यन्मध्यो चपालस्य संगृहीतं भवति ÇAT. BR. 3, 7, 1, 12. 7, 5, 1, 15. 14, 1, 2, 7. धनुः den Bogen schlaff machen, relaxare MBH. 3, 16065. — 8) seinen Geist concentriren: मयि संगृहितात्मनाम् Buāg. P. 3, 21, 24. — 9) zwingen, Jmd zu Leibe gehen: तैस्तैरुपायैः संगृह्य दापयेदधमार्णिकम् M. 8, 48. — 10) Jmd freundlich aufnehmen, willkommen heissen Hit. 91, 11. पैः संगृहीतो भगवान् Buāg. P. 9, 5, 15. — 11) zur Ehe nehmen: श्रुतेदेवां तु काश्यपो वृद्धशर्मा समग्रहीत् Buāg. P. 9, 24, 36. — 12) nennen, erwähnen: यदसौ भगवन्नाम त्रियमाणः समग्रहीत् Buāg. P. 6, 2, 13. — 13) eine Rede annehmen, auf sie hören, willig hinnehmen Buāg. P. 3, 24, 12. मूर्ध्ना संज्ञगृहे शापम् 6, 17, 37. — caus. Jmd Etwas mittheilen, mit doppeltem acc.: येनेदृशो गतिमसौ दृशमास्य ईश संप्राकृतः Buāg. P. 3, 31, 18. — desid. 1) zu sammeln sich bestreben: (न) धनं संज्ञिघृतेत् MBH. 5, 1356. — 2) zur Ehe verlangen Daçak. 172, 8.

— अनुसम् 1) Jmd demüthig begrüßen, indem man seine Füße berührt: तं (मुनिं) पप्रच्छानुसंगृह्य कृच्छ्रामापदमास्थितः MBH. 12, 3850. — 2) Jmd seine Gewogenheit an den Tag legen, beglücken: ततो ऽनुसंगृहीतो ऽस्मि पत्रप्रीतो मे भवान्गुरुः R. 6, 104, 31.

— अभिसम् zugleich umfassen (mit mehreren Fingern) GOBH. 1, 6, 13. 7, 25. 2, 6, 10. 7, 19.

— उपसम् 1) mit den Händen, Armen umfassen: समिधम् ÇAT. BR. 12, 4, 4, 6. पाणिभ्यां तूपसंगृह्य स्वयमन्नस्य वर्धितम् M. 3, 224. बाहुभ्यां ज्ञान् ÇĀKṢH. GRHJ. 4, 8. ĀÇV. GRHJ. 1, 21. चरणी MBH. 1, 5529. 3, 8482. 12, 2718. 14, 454. SuçR. 1, 249, 5. Buāg. P. 9, 5, 18. पादयोः SuçR. 2, 262, 6. गुरुन् (wobei das Umfassen der Füße gemeint ist) RV. PĀT. 13, 2, 13. PĀR. GRHJ. 2, 6. ÇĀKṢH. GRHJ. 6, 3. MBH. 1, 2183. 5262. 2, 1634. 5, 919. 3466. 13, 733. R. 2, 20, 21. 40, 1. — 2) auf sich nehmen. über sich ergehen lassen: प्रतिभामुपसर्गीश्चाप्युपसंगृह्य योगतः । तोस्तच्चविदनादप्य आत्मन्येव निवर्तयेत् ॥ MBH. 12, 5791. — 3) entgegennehmen, empfangen: गाण्डिवमुपसंगृह्य बभूव मुदितो ऽर्जुनः MBH. 1, 8492. रामम् — उपसंगृह्य भर्तारम् R. 3, 31, 28. — 4) Jmd festsetzen, gefangen nehmen PAÑKĀT. 187, 25. — 5) Jmd für sich gewinnen: शाक्यभित्तुको चीवरपिण्डदानादिनोपसंगृह्य Daçak. in BENF. Chr. 191, 15. — Vgl. उपसंगृह्य fgg.

— प्रतिस्म् entgegennehmen, empfangen: भार्गवस्य वरायुधम् । शरं च प्रतिस्ंगृह्य हस्तात् R. 1, 76, 4. तमवतीत्स्वागतमित्यनन्तरं राजा प्रहृष्टः प्रतिस्ंगृह्णाण च MBH. 4, 222. विषयान्प्रतिस्ंगृह्य संन्यासं कुर्वते यदि 12, 520.